

3026

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

— हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५३५ वि१३० [३८६]

ग्रंथ नाम

बोधवैभव

विषय

म. वेदांत.

a ein

१३०१ १/२ १३०

७.४.९९

क्रमांक ११

સો. સ. મ. ગ. (સરકારી કોલેજ અમદાવાદ
વ. નં. ૧૮૨)

शिव १८१८ (जगन्नाथकृत १७७५)

ଅନୁଷ୍ଠାନର ନାମ ଓ ଠିକଣା ଲେଖନ୍ତୁ.

212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047 1048 1049 1050 1051 1052 1053 1054 1055 1056 1057 1058 1059 1060 1061 1062 1063 1064 1065 1066 1067 1068 1069 1070 1071 1072 1073 1074 1075 1076 1077 1078 1079 1080 1081 1082 1083 1084 1085 1086 1087 1088 1089 1090 1091 1092 1093 1094 1095 1096 1097 1098 1099 1100 1101 1102 1103 1104 1105 1106 1107 1108 1109 1110 1111 1112 1113 1114 1115 1116 1117 1118 1119 1120 1121 1122 1123 1124 1125 1126 1127 1128 1129 1130 1131 1132 1133 1134 1135 1136 1137 1138 1139 1140 1141 1142 1143 1144 1145 1146 1147 1148 1149 1150 1151 1152 1153 1154 1155 1156 1157 1158 1159 1160 1161 1162 1163 1164 1165 1166 1167 1168 1169 1170 1171 1172 1173 1174 1175 1176 1177 1178 1179 1180 1181 1182 1183 1184 1185 1186 1187 11

(1)

निधानत्वमजकरो ॥ ६ ॥ मीकाणऐसपाहता ॥ ममत्वनुरेचितत्वता ॥ प
रितेहीहातवठीविवेकवंता ॥ पुसावीआदरेचित्तशुद्धि ॥ ७ ॥ जंघरीचिन्तशु
द्धतानाही ॥ तोवरीजिज्ञासानुघडेकही ॥ त्याचिन्तशुद्धीचेउपायी ॥ कर्म
कांडसमय ॥ ८ ॥ वेदानुवचनीश्रोतस्मान् ॥ जेकाम्यनिषिद्धविरहित ॥ नि
त्यनैमित्तिकप्रायश्चित्त ॥ अवेगुप्यकरानी ॥ ९ ॥ काम्यनिषिद्धवर्जनी ॥ स्व
र्गेनरकाचुकेप्राणी ॥ नित्यनैमित्तिकेकरुनी ॥ प्रत्यवायपरिहार ॥ १० ॥
प्रायश्चित्तेपातशुद्धी ॥ तेहांअतःकरणाचीशुद्धी ॥ लाधेमगतयाचीबुद्धी
॥ अवंचळजालीपाहिजे ॥ ११ ॥ लणोनिओपासनाप्रधान ॥ सगुणरा
महत्तादिचिंतन ॥ ओपासनेसाक्षात्कारीमन ॥ स्थिरतापावसदृढ ॥ १२ ॥

वोधः

२

(2)

त्याशुधातः करेण जिज्ञासा ॥ उत्पन्नहोय सुमनसा ॥ सुमुक्षते च पूर्णदशा ॥ तत्र
मन्त्रजेसी विरहिणी ॥ १३ ॥ सगुणभजनी निरंतर ॥ प्रसन्नकेला जो ईश्वर ॥ त्या
चे रूप स्ववर्णीभर ॥ सदैव सद्गुरुची प्राप्ती ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ यावन्नानुग्रहः
साक्षाज्जायते परमेश्वरात् ॥ तावन्नेव दूरः कश्चित्सखास्त्रमपि नावभत्ता ॥
॥ १५ ॥ टीका ॥ जो वरी ईश्वरानुग्रह नाही ॥ तावरी सद्गुरुन भेटे कंही ॥ गुरु भेटे तीस
वीगयी ॥ सद्गुरुन भेटे कदाही ॥ १६ ॥ गुरु आणि सद्गुरु ॥ यांचे भेद लक्षणाचा
विचार ॥ संक्षेपे कि जे लक्षणोचर ॥ गुरुभक्त संका निरसनार्थ ॥ १७ ॥ उपनयनीगु
रुत्वपित्यासी ॥ ब्रह्मचर्यगृहस्थवनवासी ॥ प्रेषोच्चारणी संन्यासी ॥ गुरुत्वआ
श्रमोत्तराचे ॥ १८ ॥ विद्याभ्यासनी विद्याप्रदगुरु ॥ अग्निहोत्री आचार्य अध्वरु

२

(2A)

३

उपासनाग्रहणीजोदेमंत्रु॥ भवोमाविष्णुगणेश॥ १८॥ सौरमंत्रशास्त्रवि
धाने॥ तेथीलजेजेआराधने॥ तेथेहीगुरुसीचप्राधान्य॥ बोळिलेअसेतेतेशा
स्त्री॥ १९॥ त्याहूनियोगाभ्यासागति॥ हठयोगकुंडलीवीथुकी॥ ओठपी
ठगोल्हाटहणति॥ भ्रमरगुंफासबोधो॥ २०॥ चतुर्दशषट्दशादि॥ चक्रपेद
प्राणसंधी॥ ऐशासांगतीयोगसिद्धी॥ तेहीगुरुतेबोळिजे॥ २१॥ त्याहूनिया
त्मज्ञानसांगते॥ पिंडब्रह्मांडउपदेशित॥ अजपागायत्रीबोधिते॥ प्रणवप्र
कारहीसर्वस्व॥ २२॥ चोवीसछतिसशाहानव॥ तत्त्वसंख्याचेभेदेवैभवा॥ पं
चीकरणचेअभिन्तव॥ ज्ञानहीसांगतीअपार॥ २३॥ अपुलालियामताप्र
माणे॥ सिध्दालागीउपदेशकरणे॥ तेथेविठ्ठलकृत्यतादावने॥ शीक्षापूर्वक
आचार॥ २४॥

बोध

३

(३)

८४

स्वसंप्रदायविधी ॥ तेथे स्वाभिनिवेशासिखी ॥ तेथेचिनिश्चयेंधी ॥ सदृढतर
होय सर्वथा ॥ २२ ॥ त्याहनिजेजेमार्गइतर ॥ मैगैशिष्यासिवाटतीकेर ॥ ते
थेचितयाचीमतीस्थिर ॥ कदाकाळीनटळवि ॥ २३ ॥ परिजंवरीश्रोत्रियज्ञान
नाही ॥ तंवरीसंशयनफिटकाही ॥ तेशिष्यबुडालेस्वमतडोही ॥ आरितीउ
पदेशगुरुचा ॥ २४ ॥ हेसर्वहीगुरुचजाणावे ॥ यणेतेंतेकार्यसंभवे ॥ परीवा
क्यार्थानुभवशिंवे ॥ त्याचानाहीप्रवृत्त ॥ २५ ॥ जोवाक्यार्थानुभवदावी ॥ प्र
त्यगात्मैक्यप्रकाशरवि ॥ त्यागुरुतंसद्गुरुपदवी ॥ येरितीभेदजाणावा ॥ २६ ॥
जयाचेनिवाक्योदये ॥ अज्ञानसंशयनाशहोय ॥ अपरोक्षताताळाळसा
ह ॥ तोश्रीसद्गुरुजाणावा ॥ २७ ॥ ऐसागुरुचाआणि सद्गुरुचा ॥ भेददा

वे०

७

तेते-

३

(३१)

र
ल

विलावेगळिकेचा ॥ ल्मणानिगुरकेलियासद्गुरुचा ॥ अनुग्रहसंपादुन
थिजे ॥ ३३ ॥ तोसद्गुरुतेविधेटे ॥ जेसत्कर्मउपासनाअवाटे ॥ घड्निता
षलियावैकुण्ठपीठे ॥ सद्गुरुलाभदयीजो ॥ ३४ ॥ ल्मणानिईश्वरानुग्रहहोय
तेसैगुरुतेलाधतीपाय ॥ सत्कर्मसंगमउपाय ॥ तेंहाविसाधकापैभेटे ॥
॥ ३५ ॥ रामदमतितीक्षाउपरति ॥ अर्थाविश्वात्मसंभेति ॥ घट्टसाधना
चीसंपत्ती ॥ मुमुक्षुअधिकारीजाणावा ॥ ३६ ॥ साधनेकरुनिविविदिशो
उदय ॥ अन्यथानघडेहानिश्वय ॥ तोइहजन्मीयासिचडोनिये ॥ अथवा
जन्मांतरीघडलीते ॥ ३७ ॥ ज्यासिज्ञानाभ्यासीप्रवृत्ति ॥ सहसाजालीय
थानिगुति ॥ त्यासिजन्मांतरीसाधनसंपत्ती ॥ घडलीऐसेजाणावे ॥ ३८ ॥

समाधान =
धा
य

४

(५)

जिज्ञासेचेहेविलक्षण॥ सर्वथासाधवेआत्मज्ञान॥ नरुचतीतयासीइत
 रसाधन॥ तोविआधिकारीमुख्यत्वे॥ ३७॥ ज्यासिअधिकारनानाही॥
 त्यासिसद्गुरुनउपदेशितीकहि॥ आणिविश्वासवानुशिष्यासिकंही॥
 वेचनानकरितीसद्गुरु॥ ३८॥ तेथेअध्यासपअपवादे॥ शिष्याचीनिरसि
 तीइंदे॥ स्वानुभवसांन्याजीसदानांदे॥ अद्वैतपणेआपुले॥ ३९॥ मुळी
 एकअखंडरसएकले॥ जेससुखानंदकोदले॥ तेआपणातेविसरले॥ ते
 विआत्मविषयीअज्ञान॥ ४०॥ स्वात्मविस्मृतीअज्ञान॥ तेविमायाऐसे
 जाण॥ तिचेदुजेनामकारण॥ सुषुप्तीआणिप्रकृतीही॥ ४१॥ मीकोण
 ऐसेस्मरणता॥ अज्ञानासीचढलीप्रोटता॥ आवरणशक्तीतलता॥ ई
 सीचपेहणावे॥ ४२॥

(4A)

प

आवरणशक्तीअसिद्धि॥ असदावरणअभानावरणबंधा॥ त्यावियानिरोध
बभेदा॥ संक्षेपमात्रेज्ञानार्थ॥ ४३॥ असदक्षणिजेआत्मानाही॥ आभानक्ष
णिजेभासतनाही॥ ऐसाचवहारअसतापाही॥ विक्षेपशक्तीउद्भवली॥ ४४॥
देहदयासहिता॥ तोमीकर्तोमीभोक्ता॥ हिविक्षेपशक्तीतत्त्वता॥ उदयकरीअज्ञा
नी॥ ४५॥ यासीजीवऐसेनाव॥ जोकमेवासनेवीधरीधांव॥ मगजन्ममरणवे
गांव॥ यथानुक्रमेभोगितसे॥ ४६॥ एकविपरीआपण॥ परिमायायोगेजगक
लन॥ त्यामाजीजीवत्वानेग्रहण॥ आपणालागीपातले॥ ४७॥ अखंडस
त्विदानंदघन॥ तोपरिपूर्णआत्माआपण॥ आत्मविस्मृतीमायागुणे॥ जी
वदर्शतेपावला॥ ४८॥ मायेमाजीप्रतिबिंबता॥ आत्माभासतलेक्षणता

५

५

५

त

(5)

आपणं पावला भेदता ॥ जीव आनि ईश्वर ॥ ४१ ॥ माया द्विधा स्वरूपवति ॥ मा
या अविव्या ऐसी वदंती ॥ ती मा जी प्रति बिंबली आत्म स्फूर्ति ॥ ते ही द्विधा पे अवि
॥ ४० ॥ माया प्रति बिंब त्वेतन्य ॥ त्यासि ईश्वर असि अभिधान ॥ अविद्या प्रति बि
बा जीव पण ॥ ऐशालक्षणी जाणावे ॥ ४१ ॥ आपणावरी सर्व कल्पना ॥ अधिष्ठा
न त्वेतन्य आपण जाणा ॥ तेथे कजिती बुधी रचना ॥ ती मा जी प्रति बिंबला तो जी
व ॥ ४२ ॥ जे जे बुद्धी वृत्ती उद्भव ॥ ते ज्ञानास ही ते विस्तार पावे ॥ त्यासि प्रमाता
ऐसे ह्मणावे ॥ वेदांत शास्त्री बोलिल ॥ ४३ ॥ बुद्धि वृत्तींची अहंता ॥ तेच जीव त्व प
दवी तत्वता ॥ अंतः करणावच्छिन्नता ॥ तथा सी असे स्वभावे ॥ ४४ ॥ जो अंतः
करणा सहित ॥ तो त्वं पदवाच्य निश्चित ॥ प्रमाद त्वकर्तृत्व भोक्तृत्व ॥ तथा सी
वैपे आसे ॥ ४५ ॥

ते

५

(5A)

स्वरूपीकलितबुद्धिमाजी॥ बिंबलीअहंतात्यासिसहजी॥ तेचिअहंता
देहेंद्रियसमाजी॥ व्यापूनिअसेराहिली॥ ४६॥ चित्प्रतिबिंबअहंकारे॥
देहव्यापिलाआनखाग्र॥ तेसाविआत्मासाक्षीसादर॥ अहंकारव्या-
पिला॥ ४७॥ साक्षीचीजेसत्यता॥ तेआणिलीजीवाचियेमाथा॥ तेचिस्थू-
ळपंचभूता॥ आत्मत्वेअसेधेतली॥ ४८॥ ऐसातीठायीअहंकारव्यापिला
॥ तेणेंसंसारसत्यकेला॥ कर्तृत्वोभनिवराधरिला॥ जीवबोळिलातो
जाणा॥ ४९॥ आताकर्तृत्वानेवळक्षण॥ तेहीसंक्षेपेकीजेविवरण॥ बुद्धि
वृत्तिवच्छिन्नजेशान॥ तोचिकेवळप्रमाता॥ ५०॥ इंद्रियापुढीलजोजो
विषय॥ तेथेइंद्रियद्वाराजाणिलाहोय॥ तेज्ञानप्रमातृत्वपावे॥ तो

चिकर्तृत्वपावेत्याशाने ॥ ६१ ॥ शानअसोनिअहंरुतीनुंदयो ॥ तोप्रमात्तप
 णावाठवो ॥ म्याजाणिलाहेवदतोपाहाहो ॥ कर्तोतोस्वयेविपैजाला ॥ ६२ ॥ जा
 णनेज्याज्यारितीवे ॥ प्रियाप्रिययाविभागवे ॥ तेविभोत्तृत्वहेसावे ॥ एका
 सीचपैजाले ॥ ६३ ॥ येविषयाउपपत्ति ॥ आचार्यसहस्त्रीवदंती ॥ तोभो
 कार्थयेअर्थी ॥ जाणूनिध्याभापंडिते ॥ ६४ ॥ श्लोक ॥ मातुमांनाभिनि
 व्यत्तिर्निष्पन्नमेयमतितत् ॥ मयाभिसंगतंतत्रमेयाभतंप्रपद्यते ॥
 ॥ २ ॥ टीका ॥ अधिष्ठानासहितचिदाभास ॥ त्यापासूनप्रकाशइंद्रिया
 स ॥ तेविषयासिपावतोयोगास ॥ तदाकारतास्वयंपावे ॥ ६५ ॥ जोजोद
 न्यआकार ॥ प्रमाताहोयतदाकार ॥ तेविजन्ममरणप्रकारा ॥ चिदाभा
 सीलागले ॥ ६६ ॥

(6A)

विदाभासेदृश्यपदार्थी॥ ममत्वधरिलेजेजेअर्थी॥ तेजीवसृष्टीयदर्थी॥
ज्ञानव्हांवेश्रोतिया॥ ६७॥ जीवसृष्टीनिवारिता॥ जीवपणहरपेतत्वता॥
सांपडेआपुलीस्वप्रकाशाता॥ विवेकवंतागुरुकूपे॥ ६८॥ जोहाजीवकमीगुं
तला॥ जन्ममरणभोगिताजाला॥ सुखदुःखबळतगाजिला॥ तोमुक्तहो
यत्तत्काळ॥ ६९॥ त्याजीवाचेहेलक्षण॥ बुद्धीप्रतिबिंबितहेज्ञान॥ त्या
सिबोलिजेजीवपण॥ सर्वसंसारयामाथा॥ ७०॥ त्याचाविवेकतोऐसा॥
स्वस्वरूपविस्मृतीचाठसा॥ तेथजगकल्पनजीवदशा॥ आरोपमृषा
पैजाणा॥ ७१॥ जाणोनिजीवसृष्टीचेवर्जन॥ जंहाघडेयुक्तिप्रमाण॥
तंहाहरपेजीवपण॥ विवेकनिपुणजाणति॥ ७२॥ दिहप्राणसहीत॥ म

बोध.

वे०

७

(७)

नबुद्धीअंतःकरणयुक्त॥ हान्यवहारजीवगत॥ त्वंपदवा-व्यार्थबोलिजे॥
॥७३॥ दिहादिबुद्धीपर्यंत॥ समूहहाअहंकारयुक्त॥ यासिजीवसंज्ञासं-
तत॥ कर्मकार्यअधिकारे॥ ७४॥ आताजीवांचनिमित्त॥ पुढेदाविजेतु
प्रत्यगात्म्यास॥ हाविक्षेपमूर्तीचाविलास॥ यायारितीचाजाणावा॥ ७५
॥ आत्माअवरुनिजेमाया॥ मायाप्रतिबिंबदोघायया॥ पासूनिजन्मलुवि
यतूयया॥ पासूनिवायोतेजजळ॥ ७६॥ जळापासूनिपृथ्वीजाली॥ पांच
हीभूतेवेगजाली॥ तेसत्वरजतमेव्यापिली॥ एकएकऐसीजाणावे॥ ७७ xx
॥ रजोंशाचीकर्मद्रिय॥ सर्वतोशेप्राणसमुदाय॥ समदशाचागोलकहो
य॥ लिंगदेहतोऐसा॥ ७८॥ अज्ञानमायासुषुप्तीदशा॥ कारणदेह

७

(7A)

सहसा ॥ लिंगदेहहाससदरा ॥ कलात्मकजाणावे ॥ ६० ॥ ५५ पंचभू
तेसत्वांशाची ॥ ज्ञानेन्द्रियेजाळीपांची ॥ मनबुधीतेसर्वसत्वांशाची ॥ उत्प
त्तीऐसीजाणावी ॥ ६१ ॥ लिंगदेहजन्मला ॥ परिराहावयाआश्रयोया
ला ॥ पाहिजेअणोनिरविला ॥ स्फुटदेहनिवृत्तिबे ॥ ६२ ॥ पंचभूतेद्विधा
कली ॥ अर्धचतुर्धाविभागिली ॥ आपल्याविणइतरावाटिली ॥ चतुर्थी
शाएकएका ॥ ६३ ॥ ऐसापंचभूतकदम ॥ पंचभूतहाभूतग्राम ॥ त्यासि
ठेविलेब्रह्मांडनाम ॥ चतुर्दशाभुवनयापोटी ॥ ६४ ॥ सप्तस्वर्गसप्तपाता
ळ ॥ मिळोनिरविलाब्रह्मांडगोळ ॥ अनेतजीवाचंगोधळ ॥ चौदाखणि
यामाजीपैज्यक्त ॥ ६५ ॥ सर्वबुधीमाजीविंबला ॥ आत्माजीवपणपा

सप्तम

बो०

६

(६)

३

वे०

प्रवेश

६

बला॥ तेथेही उत्तमाधमं भासला॥ पावला देह संबंधे॥ ६४॥ विस्तुब्रजा
ईशआदि॥ जितकी देवसमुदायमांदी॥ त्या त्या शरीरें संबंधी॥ देवपणा
ते पावला॥ ६५॥ मनुष्य आदिक कनिनीच॥ जे जे देह परमशौच॥ तेथे
प्रवेशता त्याचे॥ अभिधान त्वपावला॥ ६६॥ शरीरमात्री अहंता मानी
॥ तेथे कर्तृत्व आपणा आणी॥ करण पण मनाचे नि॥ क्रिया करी अनं
ता॥ ६७॥ येथे अकर्ता तो विकर्ता॥ जो हा विश्वश्रियेचा भर्ता॥ पात्रजा
ला अविवेकता॥ स्वसत्ता विसृतीचे निबळे॥ ६८॥ आवरण राक्तीच्या
पिली॥ तेथे विक्षेप राक्तीमातली॥ आत्मत्वाची भ्रांती जाली॥ चतुरी
झोंगविली पाहिजे॥ ६९॥ ईश्वरसृष्टीचे लक्षण॥ ते हे केले विवरण॥
॥ जीवसृष्टी त्याहुनि भिन्न॥ केलिया निमुक्त विवेकी॥ ७०॥

(8A)

क

ईश्वरनिर्मितसर्वजग॥ हेअसोनाकासंग॥ जीवासिभोग्यत्वाचायोग
स्वकल्पनावसेमानिला॥ ९२॥ भोग्यत्वाकारटाकिजे॥ मगस्वरूपेजगसह
जे॥ असोनाकाअनंतयुगजे॥ बाधाकायसाक्षीसी॥ ९३॥ भोग्याकार
ताटाकिली॥ तेहामतीअसेगुली॥ तेआत्माकारपावली॥ जगसंबंधति
येनाही॥ ९४॥ जगद्रूपविलास॥ ईश्वरनिर्मितभावकाश॥ विक्षेपशक्तीचा
विलास॥ चतुरेसादरजाणावा॥ ९५॥ आताअज्ञानशक्तीचेचिन्ह॥ मी
आत्मस्वरूपासाठीनेणे॥ आत्मानाहीचेहेशान॥ तेगुरुवाक्यबळेविना नगा
से॥ ९६॥ तेथेओतसमूहनिर्णये॥ आत्मासत्यआनंदआहे॥ त्यापासून
वियदादिहेहे॥ पंचभूतेपेजाली॥ ९७॥ आत्मासत्यत्वतेऐसे॥ दृश्यना

वाहे

बोध.

९

(१)

वे०

सलीयातेन नास्ते ॥ काळसत्ताजेथे नसे ॥ सत्यअविनाशस्मृणोनि ॥ ९ ॥
॥ काळेसृष्टीनाशपावे ॥ परिआत्मस्वरूपतेसे विआहे ॥ काळाबाहीसा
हीपाहे ॥ स्मृणोनि त्रिकाळीअबोध ॥ १० ॥ अनेककल्मेकाळगेला ॥ तेंहोआ
त्माअसेसंबला ॥ वर्तमानकाळीस्वसत्ताला ॥ एकानकागेकदापी ॥ १०० ॥
भविष्यकाळीआत्मयास्तव ॥ काळासिभविष्यऐसेनाव ॥ काळासिवर्तीव
याठाव ॥ आत्मावीणपेनाही ॥ १ ॥ काळकरुनिपरिछेदता ॥ नघडेआत्म
यासितत्वता ॥ देशकरुनियायियता ॥ आत्मस्वरूपानघडेची ॥ २ ॥ कित्ये
कदेशपरियेत ॥ आत्माअसेहोनांदत ॥ ऐसेस्मृणतानाहीअंत ॥ आत्म
स्वरूपालागुनि ॥ ३ ॥ आतावस्तुमात्रेपरिगणन ॥ नहेआत्मयाचेजाण

परी

९

(9A)

विजातीय

येचि-याये

स

सर्ववस्तु आत्मा पूर्ण ॥ अनंतत्वे रिति ॥ ४ ॥ देशकालवस्तुता ॥ खंडनपा
वे आत्मसत्ता ॥ होतो आत्मा पूर्णता ॥ उपनिषद्वागीवर्णिका ॥ ५ ॥ स्वरूप ए
कले असे पाही ॥ येथे सजातीय स्वगत भेद नाही ॥ भेदत्रयाचे लक्षण तेही
संक्षेपमात्र बोलिजे ॥ ६ ॥ वृक्षाची वृक्ष सजातीय ॥ अथवा अंम्रासि अंत्र
सजातीय ॥ इतर विजातीय विवर्ण्यादि ॥ ७ ॥ स्वगत भेद तो एका ॥ एकाच
क्षीच पत्रशाखा ॥ ते सा स्वरूपी भेद लेखा ॥ बोलून येकदा पि ॥ ८ ॥ आत्म्या
सिद्धग विजातीय लक्षणता ॥ जगासि असि लीपा हिजे सत्यता ॥ असत्य
जगे विजातीयता ॥ आत्म्यासी कैसे निपेवडे ॥ ९ ॥ स्वगत भेद जरी लक्षा
वा ॥ तरी आत्म्याच्या अद्वैत स्वभावा ॥ बोलला गेल लक्षणो निनावा ॥ विजु

६ श्रीमद्भक्तिकविजातीयग

परि

बोध

१०

(१०)

देले

नये भेदा-व्या॥११॥ आत्मा अद्वितीय पूर्ण॥ जेथे नाही स्वरूप वर्ण॥ सनात
न ब्रह्म पूर्ण॥ अंतर्बोध्य व्यापला॥१२॥ जेथाने पंचभौती करवना॥ विस्तार
रली जेवीं गंधर्व सेना॥ अनेक व्यक्ती सिद्धाभा भना॥ आत्म्यापासून निपेजा
ल्या॥१३॥ सदचिद आनंद घन॥ ऐसे आत्मस्वरूपाचे लक्षण॥ नामरूपात्म
क ऐसे चिह्न॥ ते माया स्वरूप जाणावे॥१४॥ विराट् आणित्वा व्याकृत॥ हे आ
त्मस्वरूपी भासत॥ आत्मा स्वच्छ सूर्यमातीत॥ नातळे चिदृश्यात॥१५॥
सर्वभूतीं असे वसला॥ भूतनाशन नासला॥ निजानंदे आसि कांदला॥
कालत्रयी परमात्मा॥१६॥ ऐसे श्रुतिप्रतिपाद्य आत्मा॥ गुरुमुखे होता
पूर्ण॥ विश्वास पावले शिष्यमन॥ परोक्ष ज्ञान हे॥१७॥ ऐसे असदावर

वे०

न

१०



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com